तारीख : 24 जनवरी 2014

जनमत सर्वेक्षण क्या संकेत देते हैं ?

अरुण जेटली

राज्य सभा में विपक्ष के नेता

2014 के आम चुनावों के बारे में दो अलग-अलग एजेंसियों ने जनमत सर्वेक्षण कराए हैं। सीटों को लेकर इन सर्वेक्षणों में जो कयास लगाए गए हैं उनमें मैं बहुत ज्यादा यकीन नहीं करता। खासतौर से वो भी तब जब ये सर्वेक्षण चुनाव से 3-4 महीने पहले कराए गए हों। फिर भी चूंकि जिन एजेंसियों ने यह सर्वेक्षण कराए हैं उनकी कुछ हद तक विश्वसनीयता है, यह माना जा सकता है कि इस समय वे जनता के वर्तमान रुझान को पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं।

सर्वोक्षणों से संकेत मिलता है कि भाजपा सबसे आगे है। लोकसभा चुनावों में अब तक भाजपा ने सबसे अधिक 183 सीटें प्राप्त की हैं। वर्तमान संकेत बताते हैं कि पार्टी अपने ही बलबूते इस आंकड़े को पार कर लेगी। इसके वर्तमान सहयोगी खासतौर से शिव सेना और अकाली दल भी अच्छा कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि कांग्रेस पार्टी को सूची में सबसे नीचे जगह मिलेगी। 2014 में उसे दहाई की संख्या में सीटें मिलेंगी। सबसे आगे रहने वाली और दूसरे नम्बर पर रहने वाली पार्टी में काफी अंतर रहेगा।

ऐसे करीब 10 राजनैतिक दल होंगे जिनकी सीटों की संख्या 5 से 25 के बीच रहेगी। इन सभी दलों के हाथ मिलाने की संभावना काफी कम है। अन्ना द्रमुक और द्रमुक एक तरफ नहीं हो सकते। तृणमूल कांग्रेस और वामपंथी एक साथ नहीं हो सकते। बसपा और समाजवादी पार्टी एक साथ नहीं हो सकते। भाजपा और एनडीए के सहयोगियों को छोड़कर कुछ दलों को जिन्हें अपने-अपने राज्यों में गैर भाजपा और गैर वामपंथी स्थान मिलेगा उनकी सीटों में भी इजाफा होने की उम्मीद है। अन्ना द्रमुक को कई सीटें मिलेंगी। टीडीपी फिर उभर रही है और अपना वोट बैंक मजबूत कर रही है। बीजद ने खुद को संभाल रखा है। टीएमसी भी अपनी सीटें बढ़ा रही है। वाईएसआर कांग्रेस को लेकर जो उल्लास था वह भी कम हुआ है लेकिन सीमान्ध्र क्षेत्र में उसकी सीटें बढ़ रही हैं।

जदयू जिसने भाजपा के साथ 17 वर्ष के गठबंधन के बाद भाजपा विरोधी दल के रुप में स्थान लिया है उसका पतन दिखाई दे रहा है। लोकसभा में पराजय बिहार सरकार को कमजोर कर सकती है। यूपीए के गठबंधन जैसे नेशनल कान्फ्रेंस और एनसीपी अपने-अपने राज्यों में विरोधियों से अन्तर को स्वीकार कर लिया है।

तमिलनाडु और ओडिशाा में भाजपा के मतों में पर्याप्त वृद्धि हुई है। असम में पार्टी के वोट में कोई अंतर नहीं पड़ा है। आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में पार्टी दहाई के आंकड़े तक पहुंचती हुई दिखाई दे रही है। उत्तरी और मध्य तथा पश्चिमी भरत के राज्यों में भाजपा की स्थिति मजबूत हुई है। इन जनमत सर्वेक्षणों में सबसे महत्वपूर्ण बात यह सामने आई है कि प्रधानमंत्री के रुप में नरेन्द्र मोदी की स्वीकार्यता प्रत्येक राज्य में भाजपा के वोट की तुलना में करीब 15 से 20 प्रतिशत तक अधिक है। मजबूत इलाकों में पार्टी को ऊपर ले जाने की उनकी क्षमता और गैर मजबूत इलाकों में वोट प्रतिशत में योगदान स्पष्ट है। तमिलनाडु में 17 प्रतिशत और ओडिशा में 25 प्रतिशत वोट हिस्सेदारी को और कैसे न्यायोचित ठहराया जा सकता है।

तब सरकार कौन बनाएगा? क्या भाजपा और एनडीए के अलावा कोई और मुकाबला करने योग्य है?

छोटे दलों के एक समूह बनाने का रास्ता बनाने की संभवना कभी स्थिर सरकार नहीं बना सकती। किसी भी सूरत में उनकी संख्या नहीं बढ़ने वाली। दहाई के आंकड़े पर आ जाने वाली कांग्रेस किसी वैकल्पिक गठबंधन की पिछलग्गू ही बन सकती है। यह गठबंधन का केन्द्र नहीं हो सकती। निष्कर्ष यह निकलता है कि भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार और एनडीए ही एक स्थायी सरकार दे सकती है। इन संकेतों को देखते हुए, यह वृहद एनडीए की तरफ बढ़ेगा जिसका गठन वाजपेयी जी ने किया था। अनेक दल जिन्होंने वृहद एनडीए गठित किया था अच्छा करने की स्थिति में हैं। वृहद एनडीए वर्तमान एनडीए दलों के अतिरिक्त होना चाहिए जिसमें क्षेत्रीय दल भी हों जो उनके राज्यों में गैर कांग्रेस दल का स्थान ले सकें। इस तरह का गठन वास्तव में भारत की संघीय राजनीति का प्रतिनिधित्व करेगा।

चुनावों को ध्यान में रखते हुए निर्णायक नेतृत्व, अर्थव्यवस्था में नई जान डालना और भ्रष्टाचार को हटाना मुख्य मुद्दा दिखाई देता है। इन जनमत सर्वेक्षणों से संकेत मिलता है कि स्थायी सरकार का गठन भी मुख्य मुद्दा रहेगा जो लोगों के गौर करने का विषय है। भाजपा और वृहद एनडी के अलावा और कौन स्थायी सरकार प्रदान कर सकता है?

✶ ✶ ✶ ✶ ✶